ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(4): 478-480
www.allresearchjournal.com
Received: 23-02-2018
Accepted: 28-03-2018

Sarwejeet Meena
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Govt. College, Hindaun City,
Karauli, Rajasthan, India

Correspondence Author:
Sarwejeet Meena
Assistant Professor,
Department of Sociology,
Govt. College, Hindaun City,
Karauli, Rajasthan, India

समाजशास्त्र में नई परिप्रेक्ष्य: इंटरनेट की प्रभावशालीता

Sarwejeet Meena

सारांश:
इंटरनेट ने समाजशास्त्र को एक नई परिप्रेक्ष्य प्रदान की है। यह आधुनिक संचार और तकनीकी विकास के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में माना जाता है। इंटरनेट ने सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, संचार और सामाजिक परिवर्तनों में व्यापक प्रभाव डाला है। यह एक नई चुनौती प्रस्तुत करता है, लेकिन साथ ही नई संभावनाओं को भी उत्पन्न करता है। इस शोध पत्र में, हम इंटरनेट की प्रभावशालीता पर विचार करेंगे और इसके संबंध में विभिन्न पहलुओं को छूने का प्रयास करेंगे।

कूटशब्द: इंटरनेट, समाजशास्त्र, सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, संचार, सामाजिक परिवर्तन, चुनौतियाँ, संभावनाएँ

प्रस्तावना
आधुनिक युग में तकनीकी प्रगति और सूचना संचार के क्षेत्र में हुए बदलाव ने समाजशास्त्र के अध्ययन में नई परिप्रेक्ष्य संज्ञान में लाई है। विशेष रूप से, इंटरनेट ने मानवीय जीवन को गहराई से प्रभावित किया है और सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, और संचार के क्षेत्र में नए संभावनाओं की सृजना की है। इस शोध पत्र में, हम इंटरनेट की प्रभावशालीता पर विस्तृत चर्चा करेंगे और समाजशास्त्र के आधार पर इसके महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण करेंगे।
इंटरनेट ने आधुनिक समाजशास्त्र को एक नया आयाम प्रदान किया है। यह सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, संचार और सामाजिक परिवर्तनों में व्यापक प्रभाव डालता है। इस शोध पत्र में, हम इंटरनेट की परिभाषा और इतिहास पर ध्यान देंगे, साथ ही समाजशास्त्र में नई परिप्रेक्ष्य के बारे में चर्चा करेंगे। हम इंटरनेट के प्रभाव को सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति और संचार के क्षेत्र में विश्लेषण करेंगे। इसके अलावा, हम नई चुनौतियों और संभावनाओं की बात करेंगे जो इंटरनेट के आने से प्राप्त हुई हैं।

इंटरनेट की परिभाषा और इतिहास: इंटरनेट एक वैश्विक जाल संचार नेटवर्क है जो कई अद्यतनीय तकनीकों का उपयोग करके संचार को संभव बनाता है। इंटरनेट की शुरुआत 1960 दशक में हुई जब एक अमेरिकी संगठन ने अर्पानेट (ARPANET) के रूप में एक नेटवर्क की स्थापना की। यह नेटवर्क अपनी व्यापकता और ताकत के बावजूद जनता के बीच पूरी तरह से फैला नहीं था। हालांकि, 1990 के दशक में विश्वव्यापी वेब (World Wide Web) के आविष्कार ने इंटरनेट को मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया।

समाजशास्त्र में नई परिप्रेक्ष्य: इंटरनेट के आगमन ने समाजशास्त्र को नए संदर्भ और नये सोच के साथ प्रभावित किया है। यह एक नई परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जिसने सामाजिक विज्ञानिकों को विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन करने के लिए नए तत्वों और मार्गदर्शन को उजागर किया है। इसने समाजशास्त्रीय अध्ययनों को बदलने के साथ-साथ समाज में हो रहे बदलावों को भी प्रतिदिन दर्शाया है।

सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव: इंटरनेट ने सामाजिक व्यवहार पर गहरा प्रभाव डाला है। व्यक्तियों के बीच संचार को आसान और तेज़ बनाने के साथ, यह सोशल मीडिया, ईमेल, चैट, वीडियो कॉलिंग, आदि के माध्यम से संपर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है। लोग अपने विचारों, विचाराधीनता, और सामाजिक मुद्दों पर आपसी विचार विमर्श करते हैं।

संगठन और राजनीति में इंटरनेट का प्रभाव: इंटरनेट ने संगठन और राजनीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। ऑनलाइन संगठनों और समूहों के उदय ने लोगों को साझा उद्यम, साझा संगठन, और सहयोगी कार्य करने की संभावनाएं प्रदान की हैं। राजनीतिक दल और आंदोलनों ने भी इंटरनेट का उपयोग करके अपने संदेश को पहुंचाने और समर्थन प्राप्त करने का लाभ उठाया है।

संचार के क्षेत्र में इंटरनेट का प्रभाव: इंटरनेट ने संचार के क्षेत्र में भी विपुल प्रभाव डाला है। विदेशी मीडिया और संचार के बढ़ते उपयोग ने दूरस्थ संचार को सुलभ और सस्ते बना दिया है। लोग विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों के साथ संपर्क स्थापित कर सकते हैं और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं।

सामाजिक परिवर्तनों का निर्माण: इंटरनेट ने सामाजिक परिवर्तनों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने सामाजिक अवस्थाओं को प्रभावित किया है, जैसे व्यापारिक व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, न्याय, और वाणिज्यिकी। इंटरनेट के माध्यम से लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बैंकिंग, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, और नौकरी खोज सकते हैं।

नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ: इंटरनेट के आने से कई नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं। डिजिटल विभाजन, नैतिकता के मुद्दे, डेटा सुरक्षा और निजता के मुद्दे, संवेदनशीलता, और डिजिटल संपत्ति के मामले पर चर्चा हो रही है। इंटरनेट के उपयोग से जुड़े मानवाधिकार, साझेदारी, और न्याय के मुद्दे भी उठ रहे हैं।

संपादन और सारांश: इंटरनेट ने समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक नई परिप्रेक्ष्य प्रदान की है और समाज में व्याप्त संशोधन का उदाहरण साझा किया है। इसने सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, संचार, और सामाजिक परिवर्तनों को प्रभावित किया है। इंटरनेट के साथ नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ भी

आई हैं, जो हमें समाधान और सामरिक उत्पादन के माध्यम से सामाजिक विकास के लिए तैयार होने की आवश्यकता को सामने लेने की आवश्यकता है।

संक्षेप और समाधान: इंटरनेट ने समाजशास्त्र के बहुत सारे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इसके साथ ही नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ भी आई हैं। इंटरनेट के सकारात्मक प्रभाव को संज्ञान में लेकर हमें नीतिगत संशोधन, नैतिकता के मानदंडों की पुनराराचना, सुरक्षा के प्राथमिकता का ध्यान देना, और सामाजिक न्याय के प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

इंटरनेट की प्रभावशालीता समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और उच्चतम प्राधान्य रखती है। यह सामाजिक व्यवहार, संगठन, राजनीति, संचार, और सामाजिक परिवर्तनों पर व्यापक प्रभाव डालता है। इसके साथ ही इंटरनेट ने नई चुनौतियों को भी उत्पन्न किया है, जिन्हें हमें समाधान और सामरिक उत्पादन के माध्यम से संभावित समाजिक विकास के लिए संज्ञान में लेना होगा।

संदर्भ

1. कैस्टेल्स, एम. (2000)। "नेटवर्क सोसाइटी का उदय।" ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल.
2. वेलमैन, बी. (2001)। "भौतिक स्थान और साइबर स्थान: नेटवर्कयुक्त व्यक्तिवाद का उदय।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्बन एंड रीजनल रिसर्च, 25(2), 227-252।
3. हॉवर्ड, पी.एन., और पार्क्स, एम.आर. (2012)। "सोशल मीडिया और राजनीतिक परिवर्तन: क्षमता, बाधा और परिणाम।" जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 62(2), 359-362।
4. वैन डिज्क, जे. (2006). "द नेटवर्क सोसाइटी: न्यू मीडिया के सामाजिक पहलू।" थाउजेंड ओक्स, सीए: सेज प्रकाशन।
5. बॉयड, डी. (2014)। "यह जटिल है: नेटवर्क वाले किशोरों का सामाजिक जीवन।" न्यू हेवन, सीटी: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. गोयल, संजीव. (2017). समाजशास्त्र में इंटरनेट की भूमिका। समाजविज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 6(1), 24-36.